प्रभु के साये में
अनुभूति एवं स्पंदन
के आइने से

फरियाद

रहिमते- हज़ूर !
रहिमत का मज़ा दिजीऐ
मज़ा दिजीऐ ।
मज़ा दिजीऐ ।
जी करदा है सधरां ते उमँगां नाल
प्यार दी गोटी ते रुह दी किनारी नाल
सजाया है इह सोहणा रुमाला जेड़ा
खुद आ के तुहाडे चरणां विच अर्पित कर देईए
रहिमते-मालिक !
तेरे भक्तां दे हजूम विच
तुहाडे कोल आईए किस तरां
मिलिआ है मौका सबब दे नाल अज
तुहाडे तक आ के चरणां दी छोह पाईए किस तरां
कुछ ऐसा कर दिओं महाराज !
लंघ के प्यार दी गली विचों
तुहाडे चरणां तक आ सकिए
मन दी एह भेंट तुहाडे तक पहुँचा सकिए
जी करदा है रज रज गलवकड़िआं पा लईऐ
अपने दिल दी गल सुना लईऐ,कुछ सुन लईऐ

रहिमत-ए-खुदा !
रहिमत का मज़ा दिजीऐ ।
मज़ा दिजीऐ ।
मज़ा दिजीऐ ।
किस तरां करां शुक्रिया तुहाडा
साडे कोल ते कुछ वी नहीं इस दिल दे सिवा
पाठ करना असी जाणदे नहीं
सिमरण कर सकदे नहीं
कुछ ऐसा कर दिओं महाराज !
जदो धन दी निकले मनों आवाज़
गुरू नानक दी रुह सामाणे होवे
जिस नू प्यार दा एह सलाम पहुचाँ सकिए

हजूरे-अनवर !
रहिमत का मज़ा दिजीऐ
मज़ा दिजीऐ दीजीए ।
मज़ा दिजीऐ दीजीए ।

मेरे- मालिक !
साडी ना कोई मंग प्यारे
साडी ना कोई चाह प्यारे
साडी तां इको ही है उमंग प्यारे
असी जिथे वी हौईए
जिस हाल विच हौईए

तुहाडे जिस स्वरूप दे दर्शन करना चाहिए
उसी स्वरूप दे दर्शन हो जाण
इस रूह नू सिर झुकान दा मौका मिल जावे

ए रबा मेरेआ !
कुछ ऐसा कर दिओ महाराज !
साडा सलाम कबूल हो गिआ है
ऐसा इहसास रूह नू हो जावे
रहिमत का मज़ा दिजीऐ दीजीए
मज़ा दिजीऐ दीजीए ।
मज़ा दिजीऐ दीजीए ।

ए मेरे परवरदिगार !
सेवा ते प्यार दा जामा पिहनाइआं है जिहड़ा
उस नू जग विच फैला देईए
तेरी रहिमत दी खुशबू प्यार ते सेवा दे राइही
जग विच फैला देईए
इस प्यार दे मटके नू
इन्ना भर दिओ महाराज !
प्यार ते सेवा नाल छलकदी रूह नू
प्यार नाल छिपा लईए
रंग ते स्वरूप प्यार विच बदल जाये
एसी ही छोटी ते बेतुकी है फरियाद साडी
रहिमते- प्रसाद का मज़ा दिजीऐ दीजीए

मज़ा दिजीऐ दीजीए ।
मज़ा दिजीऐ दीजीए ।

रहिमते-हजूर !
इस दिल दिआं खिडकिआं नू
दरवाजिआं विच बदल देओ
तुहाडी दिती होई रहिमत नू
इस जग विच लुटा देईऐ
प्यार ते सेवा दे सरोवर विचों
खुशियां नू इस तरहां फैला देईए
जिस तरां खुशियां दे हँजुआँ दी छोह नहीं

रहिमत-ए-हजूर !
रहिमत का मज़ा दिजीऐ
मज़ा दिजीऐ ।
मज़ा दिजीऐ ।

1प्रभु प्यार एक भण्डाराहै जिस मे जितना प्यार डालोगे उतना ही बढ़ेगा जितना बाँटो गे उतना और बढ़ेगा
2अपने जीवन की परतों को एक एक खोल कर देखें तो आप पाएंगे कि प्रभु की अनुभूति में प्रभु की महिमा नीतान्यों के तान काएक अन्य वास्तविक रूप हैं।
3ज्ञान की परिधि से परे विश्वासके पात्र में आस्था की अर्चना लिये मन की आँखों से प्रभु को पुकारो तो आप के सामने प्रभु की जैसी

आप परिकल्पना करते हैं वैसा ही रूप आप के सामने होगा जिसे आप श्रद्वा पूर्वक नमन कर सकते हैं प्रणाम अवश्क स्वीकार हो गा।

4 खुदा के पास हमारा एक खाता है जिसमें हमारे कर्मो का हिसाब किताब रहता है।

5 फकीर की राह जिस पर वह साध संगत को ले कर जा रहा है आप इस का कई बार अन्दाजा लगा सकते हैं परन्तु उस के अगली परियोजना का नहीं।

6फकीर की नज़र में सभी सेवादार एक समान हैं परन्तु उनको रहमत का प्रसाद भिन्न भिन्न होताहै क्योकि यह सभी सेवादारों की ग्रहणशीलता पर निर्भर होता है।

7 एक रूपये की अर्चना का अध्यात्मिक मूल्य एक करोड से भी अधिक हो सकता है।

8 खुदा को सीधी की गई प्रार्थना अधिक प्रभावशाली होती हैबनिस्मत किसी के माध्यम से कराई गई प्रार्थना के इस का प्रमुख कारण यह है कि प्रार्थनाकर्ता की मनः स्थिती प्रार्थनाकर्ता ही अच्छी तरह जानता हैबजाय स व्यक्ति के जिस के माध्यम से प्रार्थना करवाई जा रही है।

9 प्रभु एक है परन्तु उस के स्वरूप अनेक हैं सभी अपनी अपनी श्रद्वा और अराधना के द्वारा उस के अपनी इच्छा अनुसार स्वरूप को देख पाते है। आप का धर्म सही है परन्तु अन्य गलत नही।

10 आप का धर्म सही है परन्तु अन्य गलत नही।

11 प्रभु ! हम अपने मन में सजाये मानंसिक फूलो के अतिरिक्त कुछ भी आप को चरणों में अर्पित नही कर सकते हमारे पास ऐसा

कुछ भी नही जो मेरी पसंन्द का हो हम इन्हे अपनीओर से सुस्जित रूमाले के साथ भेट कर रहे हैं कृपया स्वीकार करे। आप के साथ किये वायदे को मैं निभा पाऊ मुझे उतनी तन और मन में शक्ति देना ताकि सेवा ही मेरा कर्म बना रहे।

12सामुहिक साध संगत द्वारा रखाये पाठ की अरदास 22.3.1997 को बाबा जी ने लिख कर दी डेरा साहिब में

गुरू बाबा बढभाग सिंह जीओ

आप जी दी प्यारी ते दुलारी साध संगत ते सेवादार आप जी दिती हुई दाताँ दा बडे सत्कार प्यार ते नम्रता नाल धन्यवाद करदे हन अते प्राथर्ना करद हन कि आपजी अपनी छत्रछाया हमेशा साडे सिरां ते बनाए रखो एवम अपनेचरणां दे प्यार दी हमत दी वरखा करदे रहो ।

13 ऐ खुदा तेरी रज़ा में राजी हम जिस हाल में रखोगे रह लेगे हमजो कुछ कहोगे तेरा आदेश समझ लेंगे हम जो कुछ भी आप देगे हमे प्रसाद समझ कर के लेंगे हम जो कुछ भीतूने दिया है हमें तेरा कोटी कोटी धन्यवाद ।

14 ऐ महाराज अस्सीं तेरे दराँ दे बूटे, अस्सीं तेरे दराँ दे बूटे राखो लाज हमारी।

15 मन की दहलीज पर बैठा मैं तो प्रभु तेरी राह बटोर रहा था तुम तो अचानत ही आ गये और मैं तुम्हारी निकटता के आनन्द मे इतना भाव विभोर हो गया कि मैं मन में सजाये फुलों कागुलदस्ता भूल गया आप ने अपने पाँव छूने का अवसर ही नहीं दिया और अपने गले लगा कर इतना प्यार दिया कि मैं संगत के बीच तेरे प्यार की खुशबू ही बाँटता रहा क्षमा करना मेरे मालिक !

16 प्रभु की भाषा एक नही अनेक है इस की कोई लिपी या सिइही नहीं यह साधक के मन की भाषा मे सुनी तथा भावनों की तरँगो की लहरो मे महसूस की जाती हैं।इसी कारण सभी देशों के वासी इसे जान और पहचान पाते हैं।

17 जब कभी आप प्रार्थना में इन शब्दों का प्रयोग करते निमानयां दे मान, उस समय आप के मन में वह तसबीर उजागर होनी चाहियेजब प्रभु ने आप की पुकार पर आप का साथ दिया और आप को मुशकिलो से बचाया, जब कभी आप प्रार्थना में इन शब्दों का प्रयोग करते हैं नितानियां दी तानआप के सामने अपने जीवन की वे तसबीर उजागर होनी जिस में प्रभु ने आप के जीवन की कठिनाईयों के सामने एक दीवार बन कर खडे हुए और आप पर किसी तरह की कठिनाई नही आने दी, जब आप के मुख से निओटियां दी ओट शब्द निकले तब आप के जीवन के पल दृष्य बनकर सामने होने चाहिये जब प्रभु ने आप के जीवन में अपनी छत्रछाया की चादर आप को पहनाई और आप के सामने आने वाली मुशकिलो से बचाया, जब आप के मुख से निआसरां दे आसरे शब्द निकले तब आप के जीवन के वह पल सामने होने चाहिये कि जब आप का सब ने साथ छोड दिया तब प्रभु आप का साथ खडे हुए, जब आप के मुख से निगतआं दी गत शब्द निकले तब आप के जीवन के वह पल सामने होने चाहिये जिस का कोई इस दुनियां में नही था तब भी आप ने साथ दिया कैसे करू शुकराना।

18 प्रभु की ओर दो कदम बढाने पर कई सामाजिक एवम व्यक्तिगत समस्याएं आ कर घेर लेती हैंऔर विचलित कर देती हैं इसी का नाम प्रभु परीक्षा है।

19 कुछ ऐसा कर दियो महाराज तुझे जब चाहूँ जहाँ चाहूँ जैसे चाहूँ नमन कर सकूँ नमन आप के चरणोंतक सीधा पहुचँ जाये ऐसी ही कूछ मन की तमन्ना है।

20 कई बार प्रभु के निकट पहुचँ कर उस का प्यार का अहसास पाने में व्यवधान आ जाते हैं, क्रम टूट जाता है ध्यान एकागर नहीं हो पाता, निराश न हो पुनः पुनः प्रयास करे सफलता अवश्य मिले गी ।

21 प्रभु के चरणों में प्रार्थना के समय उचित वातावरण बना कर प्रार्थना करें जल्दी व भागदौड में की गई प्रार्थना, प्रार्थना नहीं है।

22 शुरू शुरू में प्रभु के प्यार में प्यार से पूर्ण वातावरण का दौर कई बार आता है स्थाई नहीं रह पाता निराश न हो ।

23 प्रभु की निकटता में आनन्दपुर्ण दौर में झूलने के लिये कभी कभी झोंका आता है और आनन्द की अनुभूति दे कर चला जाता है चाहने पर भी टिकाऊ नहीं हो पाता।

24 मन प्रभु की अराधना में और भाषा पर मौन प्रार्थना की चरमसीमा है क्योंकि बोलने पर मन भावनाओं में निहित संदेशों को सीमित कर देते हैं।

25 मौन की प्रार्थना असीम है। बोलने पर अर्थ और भावनायें सीमा में बन्ध जाती है।

26 रास्ते में आने वाले कष्ट और कठिनाईयां आप की ओर कदम बढाने के निश्चय को पुष्ट करते है। जब प्रार्थना कबूल हो जाती है

तो मन की सीमाओं से निकली खुशबूप्रभु का घन्यवाद करते हुए असीम खुशी का अनुभव करती है और प्रभु का घन्यवाद करती है यह प्रभु की निष्ठा में पुनर्विश्वास की पुष्टि करता है।

27 प्रभु ! कल जो सत्य बोलने से अपमानित होना पडा सचाई की राह पर चलने से जो असहनीय कष्ट हुआ वह कल था आने वाला कल सत्य मार्ग का हिमायती हो गा। ऐसा मेरा दृढ निश्चय है । प्रभु !आप के द्वारा बताए गए रास्ते पर चलने से पुनः विश्वास जगा है।

28 ऐ प्रभु ! आप की साध संगत ने जो कुछ भी प्यार व मानसिक कष्ट दिया व आप के दरबार में आप के चरणों के निकट बैठे हुए आ कर झंकोर दिया वह आप की ही तो अमानत है जब चाहो गे वापिस ले लोगे।

29 प्रभु !कभी कभी तेरे रंग में मर्यादा भी भूल जाता हूँ कृपया क्षमा करना।

30 प्रभु ! आप ने जो मान सम्मान दिया उस के काबिल तो मैं नही हूँआप आये और बच्चों को अपना आशीर्वाद दिया मै कैसे धन्यवाद करूं मै नहीं जानता कृपया मन में सजाये भावनाओंके धन्यवाद पुष्पों को तो स्वीकार कर लो।

31 जिधर ले चले पाँव उधर चल पडा मैं मुझे क्या पता था उधर भी है मेरे रहबर का धर।

32विभिन्न अवस्थाओं में प्रभु का मिलनेवाला रूप स्वरूप वास्तव मेंएक ही है अतः अपने मन को साफ-सुथरा एवं शुद्ध रख कर निर्मल भाव से उस के रूप को निहारते की कामना करो और मिलने पर निहारते रहो।

33 प्रभु ! अस्सी तां तुहाडी उडीक कर हे हां हुन ता साडा मन ओदर गया है कदों आ रहे हो।

34 ऐ प्रभु ! आपने प्यार की रहमत भरी सौगात दी है ऊन सब के लिये ध्नयवाद देने के लिये मेरे पास कुछ भी नही क्या करूँ।

35 ऐ प्रभु ! आप द्वारा दी हुई खुशी को छिपा नही सकता बांटने का मन करता है कृपया क्षमा करना।

36 ऐ प्रभु ! मन की लकीरों को हूबह आप के चरणों में समर्पित कर रा हूँ कृपया स्वीकार करें।

37 ऐ प्रभु ! आप की छत्रछाया में आत्म चिंन्तन के महायज्ञ के अवसर पर अनुभूति का जो प्रसाद मिला उस का मज़ा ही कुछ और है।

38 ऐ प्रभु ! आप के लिये जो मन के बाग में सजाये फूल आर्पित करने के लिये ला रहा था पर आप अचानक सामने आ गये मैं उन्हे आप को भेंट करना ही भूल गया अन्जान जान कर क्षमा कर देना।

39 दूसरों क मत देखों दूसरों के दोष देखने से आप स्वयं दुषित होंगे अपने को देखो ताकि अपने दोषो को प्रभु के सहयोग से दूर र पाएं।

40 दिल की पगडंडियों पर चलते चलते जिस मंजिल पर पहुँचा वह तो पभु का दरबार है कृपया की यात्रा स्वीकार करें।

41 आँखों से परे दृष्टि के पास है मेरा मालिक आप को मेरा शतः शतः प्रणाम।

42 ऐ प्रभु ! उस रोज़ दूर पहाड़ पर बिन बादल अमृतवर्षा कर आप ने जो प्रसाद दे कर आनन्दि किया उस से मेरे विश्वास की पुनः

पुष्टि हुई कि प्रार्थना सहजमन अधीर और निर्मल भाव में की जाये तो प्रभावी एवं तुरन्त मंज़ूर हो जाती है।

43 ऐ प्रभु ! इस सरगम के तार ऐसे बना दो कि आप के साधकों की प्रार्थनायें आप तक सीधी पहुँचाई जा सकें।

44 ऐ प्रभु ! आप ने जो यह कलम दी है म उस के लिये आपका धन्यवाद करते हैं तथा आप से प्रार्थना आप ने जो यह कलम दी है म उस के लिये आपका धन्यवाद करते हैं तथा आप से प्रार्थना करते हैं कि हमें सामर्थ्य एवं साहस भी प्रदान करें ताकि हम आप के आदेशानुसार न्याय कर सकें।करते हैं कि हमें सामर्थ्य एवं साहस भी प्रदान करें ताकि हम आप के आदेशानुसार न्याय कर सकें।

45 आप ने जो यह कलम दी है हम उस के लिये आपका धन्यवाद करते हैं तथा आप से प्रार्थना करते हैं कि हमें सामर्थ्य एवं साहस भी प्रदान करें ताकि हम आप के आदेशानुसार न्याय कर सकें।

46 प्रार्थना को प्रार्थना के रूप में करें नाकि खानापुरी।

47 प्रार्थना के माध्यम से प्रभु से वरदान मागते समय एक समय पर एक ही वरदान मागें ।

48 तंत्र और यंत्र प्रार्थना का विकल्प नहीं।

49 प्रभु को रूपया पैसा , कीमती उपहार व वस्तु नहीं चाहिये प्रभु प्रेम भाव के भूखे है और देखते हैं कि मेरे भक्त की मुझ से मिलने की ललक कितनी है।

50 प्रभु से तार जुडने पर प्रभु की उपस्थिती का अहसास मानव स्वमं महसूस कर लेता है साधक की टाँगो अथवा बाजुओं के बालों मे सिरहन का अनुभव होता है।

51 प्रभु की निकटता के समय कई बार स्वअवतरित आँसों व बोल निकलते हैं।

52 प्रभु का कृपा पात्र होने की ज्ञान का होना आवश्यक नहीं प्रभु प्यार और भावनाओं की आवश्कता है।

53 कई बार साधक प्रभु को मिलना चाहते है और बँद आँखों से आप प्रभु को देख सकते हैं इस भ्रान्ति को मन से निकाल दो कि खुली आँखो से आप नहीं देख पातेभाव के द्वार खुले होने चाहिये।

54 बेमौसम धीमी धीमी अमृतवर्षा अचानक प्रार्थना केसमय प्रभु के प्रसाद का धोतक है।

55 प्रभु से निकटता की स्थिती सुबह सुर्य निकलते समय और शाम को सुर्स अस्त होते समय प्रायः लाभकारी होती है।

56 अज्ञान हमारी धरोहर है ज्ञान हमारी कसौटी है।

नोटः इस पुस्तक का विमोचन बाबा अजीत सिंह जी द्वारा अजीत दरबार,मैडी में 13.3.2003 को अपने करकमलों द्वारा किया गया।